यज्ञ की यह शुद्ध हवा , सब रोगों की है दवा।

आयुर्वेदिषु यत्प्रोक्तं यस्य रोगस्य भेषजम्।
तस्य रोगस्य शान्त्यर्थं तेन तेनैव होमयेत्॥

(प्रपंचसारसारसंग्रह)

आयुर्वेद ग्रन्थों में जिन रोगों के शमन के लिए जिन औषधियों का विधान है, उन-उन रोगों के शमन हेतु उन्ही औषधियों से हवन करें।

होतृषदनं हरितं हिरण्ययम् -अथर्व.-7.99.1 यज्ञकर्ता का घर सभी प्रकार के ऐश्वर्यों से भर जाता है।